दक्षिण के नाड़ी ग्रंथ और उत्तर भारत की भृगु संहिता: तुलनात्मक अध्ययन

E Book 211

सप्तर्षि महर्षि शंकर पार्वती को श्रद्धांजलि देते हैं और नाड़ी भविष्य बताने के लिए प्रेरणा मांगते हैं।



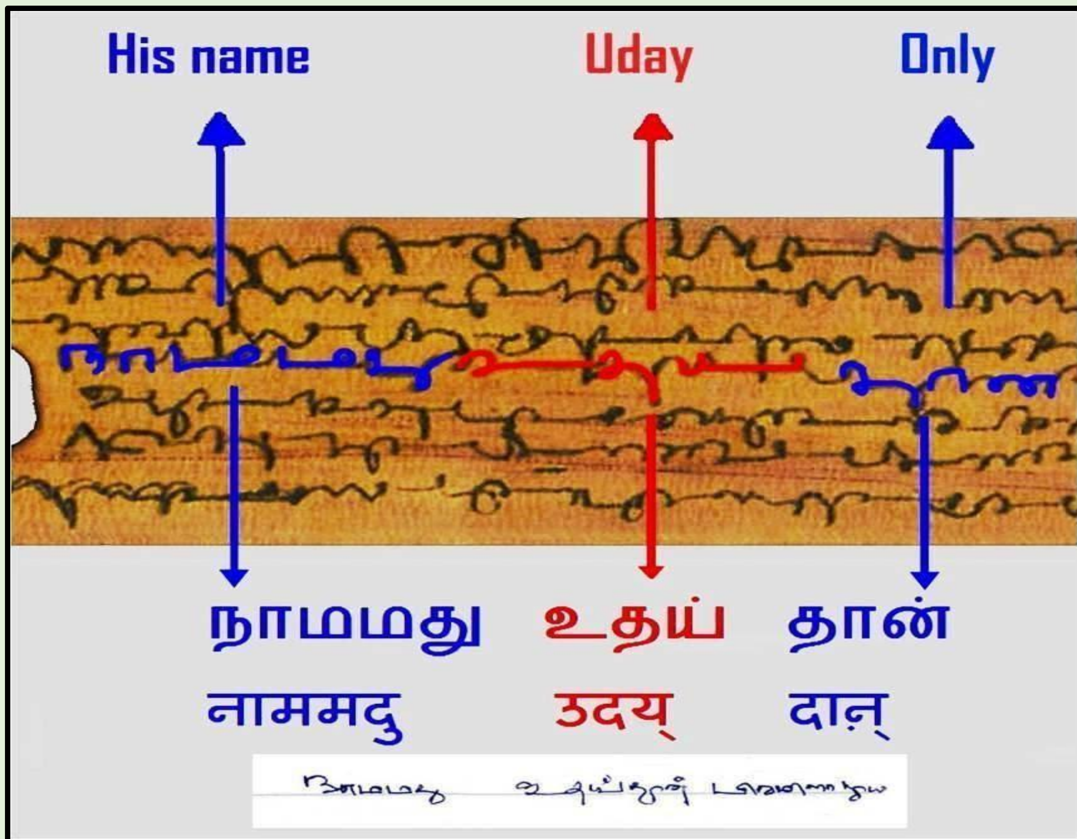
●भृगु संहिता: भृगु महर्षि विष्णु की पूजा करते हैं (संहिता में हमेशा इसका उल्लेख नहीं किया गया है)।



महर्षि भृगु और उनके पुत्र शुक्राचार्य स्नातकों के सामने जातक की समस्या पर चर्चा करते हुए।



अगस्त्य महर्षि नाड़ी भविष्य कथन में अग्रणी हैं। तमिल भाषा के जनक श्रीराम को आधुनिक शस्त्र प्रदान करते हैं। कावेरी नदी पर बांध बनाकर धान की खेती के लिए भूमि उपजाऊ बनाते हैं



उदय व्यक्ति का नाम नाड़ी पट्टी में ऐसा दिखता है।

लिपि:

दक्षिणी नाड़ी ग्रंथ: तमिल लिपि (ग्रंथम और ब्राह्मी लिपि के संक्रमण काल में उपयोग की जाने वाली भाषा और लिपि)

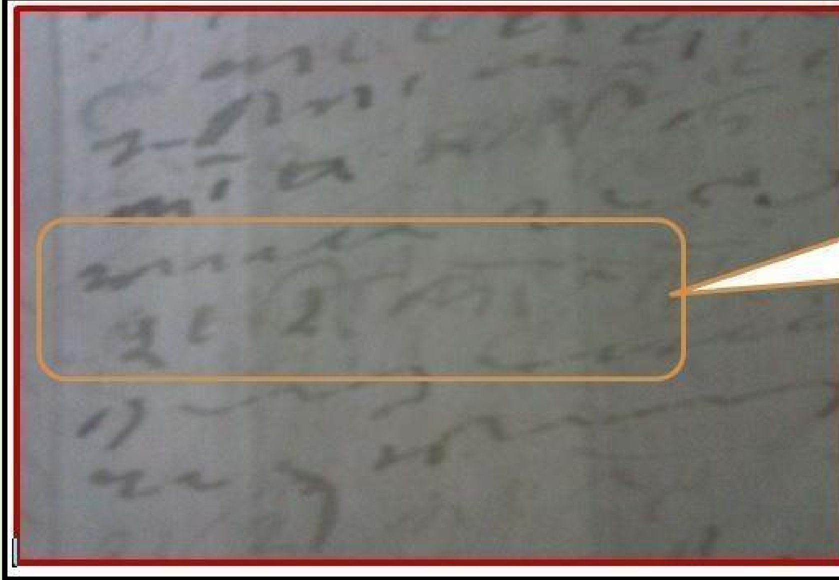
नाड़ी भविष्य एक काव्य है। यह सिंदुपा काव्यालंकार में श्लोकबद्ध किया गया होता है।

नाड़ी ग्रंथ ताड़पत्रों पर उकेरकर लिखे जाते हैं।

उत्तर भारत की संहिता: देवनागरी लिपि (मुख्य रूप से), कुछ स्थानों पर पाली लिपि (उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़, लखनऊ और मेरठ में)।

● उत्तर भारत की भृगु, अरुण, सूर्य, कपाली आदि संहिताएँ मोटे कागज पर स्याही से लिखी होती हैं। भाषा संस्कृत होती है, लेकिन काव्यात्मक नहीं होती।

स्वरूप:



- शशिकान्त नाव भृगुपत्रात असे दिसते.
- भृगुपत्र में शशिकान्त नाम ऐसे दिखता है।
- The name Shashikanta appears in the Bhrigupatra.

- **भृगु संहिता:**

  गुरु भृगु और शिष्य शुक्राचार्य के बीच संवाद रूप में रचना।

- **नाड़ी पट्टी:**

  व्यक्ति से संवाद (कभी-कभी शिष्य ग्रह-तारों की स्थिति के आधार पर प्रश्न पूछकर संवाद करता है)।

- **खोजने की विधि:**

  नाड़ी पट्टी: व्यक्ति के हाथ के अंगूठे के निशान से खोजी जाती है। जन्म ग्रहदशा (कुंडली) तैयार मिलती है।

  भृगु संहिता: कुंडली की सहायता से खोजी जाती है (पंजाबी में इसे 'टेवा' कहा जाता है)।

- **जानकारी:**

  नाड़ी पट्टी: इसमें माता-पिता, पति-पत्नी और स्वयं का नाम, जन्म तिथि, शिक्षा, नौकरी-व्यवसाय आदि का स्पष्ट उल्लेख होता है।

भृगु संहिता: इसमें हमेशा जानकारी का उल्लेख हो, ऐसा आवश्यक नहीं होता।

- **ग्राहकों की सुविधा:**

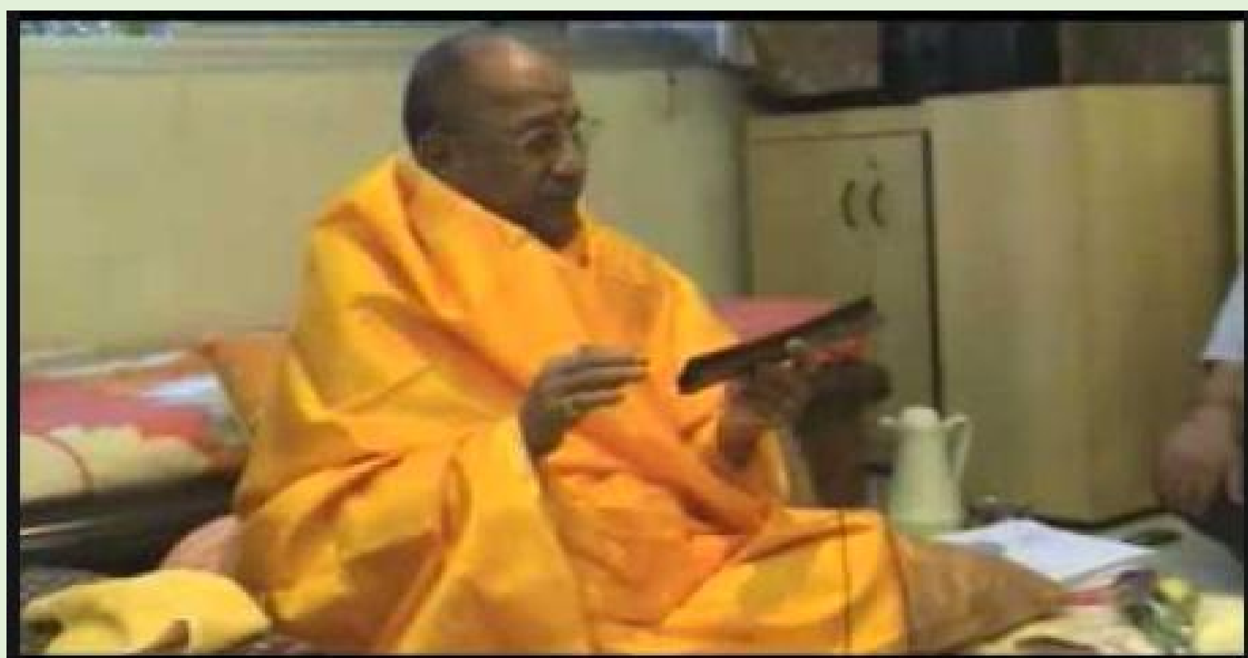
नाड़ी पट्टी: नाड़ी पट्टी का लेखन तमिल भाषा में कॉपी में दिया जाता है। हिंदी अनुवाद की कैसेट या मोबाइल पर वीडियो रिकॉर्डिंग देने की व्यवस्था होती है।

भृगु संहिता: संहिता की कॉपी या अनुवाद की कैसेट देने की कोई व्यवस्था नहीं होती। भृगु पत्रों के फोटो खींचने या कार्बन टेस्ट करने की अनुमति शास्त्री नहीं देते।

- **संरक्षण:**

ताड़पत्र: पुराने होने के बावजूद उस पर खुदा हुआ लेखन मिटता नहीं है।

संहिता: कागज पुराना होने और स्याही का रंग उड़ने से लेखन अस्पष्ट हो सकता है।



रमणी गुरुजी, तांबरम (चेन्नई) में काकपुजंदर (तमिल उच्चारण) जीवनाड़ी के वाचक (वक्ता)



श्री शामाचरण तिवारी होशियारपुर भृगुवक्ता

समाप्त